विद्या -भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

दिनांक --- 26 - 5 - 2020
कक्षा --- द्वितीय
विषय --- हिन्दी
विषय शिक्षिका -- निक्की कुमारी

सुप्रभात बच्चों ,

आज आपलोग एक नई कहानी के बारे मे जानेंगे । जिसका शीर्षक है , " अनोखा पुरस्कार " आप सोच रहे होंगे की ये कैसा पुरस्कार है ।तो बच्चों आइए आज हम इस नए पुरस्कार के बारे मे इस कहानी के माध्यम से जानें ।

पाठ- 3 अनोखा पुरस्कार

भव्या को दौड़ना बहुत पसंद था । जब भी दौड़ की कोई प्रतियोगिता होती तो भव्या उसमें भाग जरूर लेती । उसे हमेशा प्रथम पुरस्कार मिलता था । उसके माता-पिता , परोसी , अध्यापक -अध्यापिकाएँ सभी उस पर गर्व करते थे ।भव्या दौड़ में जितनी अच्छी थी , उतना ही अच्छा उसका स्वभाव भी था । सबकी सहायता करना उसे अच्छा लगता था।

आज विद्यालय में दौड़ प्रतियोगिता होनी थी । भव्या पिछले दो महीनों से पढ़ने के साथ-साथ सुबह -शाम दौड़ लगाकर इस प्रतियोगिता की तैयारी कर रही थी । दौड़ शुरू ही हुई थी कि अचानक भव्या के साथ दौड़ रही उसकी सहेली नेहा को ठोकर लगी और वह जोर से नीचे गिर गई। उसके घुटने से खून बहने लगा। भव्या रुक गई। वह भागकर नेहा के पास गई। उसे सहारा देकर उठाया और धीरे-धीरे प्राथमिक चिकित्सा कक्ष में ले गई । वहाँ नेहा की मरहम पट्टी की गई ।

जब तक भव्या खेल के मैदान से वापस आई , दौर खत्म हो चुकी थी । वह समझ नहीं पा रही थी कि नेहा की मदद करने के लिए खुश हो या दौड़ हार जाने के लिए दुखी हो । ऐसा पहली बार हुआ था कि भव्या ने किसी दौड़ में हिस्सा लिया और वह जाती न हो। वह मायूस होकर मैदान में खड़ी हो गई । तभी खेल प्रशिक्षक के साथ प्रधानाचार्य जी भव्या के पास आ पहुँचे और उसे जीत की बधाई देने लगे।

भव्या कुछ समझ नहीं । तब खेल प्रशिक्षक ने मुस्कुराते हुए उसे समझाया कि आज के मुख्य अतिथि ने दौड़ के दो विजेता घोषित किए हैं। पहली दौर में जीतने वाली लड़की और दूसरी भव्या जिसने नेहा की सहायता करके मानवता की दौड़ जीती थी । इस जीत का पुरस्कार भव्या के लिए अनोखा पुरस्कार था ।

हमने सीखा-- हमे मुसीबत के समय अपना स्वार्थ भूलकर दूसरों की मदद करनी चाहिए ।

शब्दार्थ :-
प्राथमिक चिकित्सा कक्ष -- जहाँ शुरुआती इलाज होता है।
मायूस -- दुखी
प्रशिक्षक -- सिखाने वाला
अतिथि -- मेहमान
विजेता -- जीतने वाला

कहानी को ध्यानपूर्वक पढें तथा जिसे पढने मे कठिनाई हो उसे लिखें ।